खंड 2, अंक 2,फरवरी, 2023

समाचार पत्रिका

भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषज संहिता आयोग

(भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी केंद्रीय औषधि प्रयोगशाला)

आयुष मंत्रालय

“भेषजसंहितीय मानकों को हिंदी में प्रकाशित किया जाएगा”: डॉ. रमन मोहन सिंह, निदेशक, पीसीआईएमएवंएच

“भारत के संविधान में राजभाषा का स्थान एवं राजकीय कार्यालयों में राजभाषा का कार्यान्वयन” पर कार्यशाला

2 जनवरी 2023 को पीसीआईएमएवंएच के पदाधिकारियों तथा स्टाफ सदस्यों के लिए “भारत के संविधान में राजभाषा का स्थान एवं राजकीय कार्यालयों में राजभाषा का कार्यान्वयन” पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। केंद्रीय विद्यालय, गाज़ियाबाद से डॉ. उमेश कुमार, होम्योपैथिक भेषजसंहिता प्रयोगशाला के पूर्व निदेशक डॉ. डी.आर. लोहार, डॉ. जी.पी.गर्ग, पूर्व वरिष्ठ मुख्य रसायनज्ञ, आयुष मंत्रालय, डॉ. राजीव कुमार शर्मा, पूर्व निदेशक पीसीआईएमएवंएच, श्री सद् गुरु प्रसाद यादव, पूर्व औषध नियंत्रक, यू.पी. सरकार, डॉ. जय प्रकाश, पूर्व निदेशक पीएलआईएम, डॉ. रवीन्द्र सिंह, सहायक निदेशक (रसायन), सीसीआरएएस कार्यशाला के मुख्य अतिथि थे। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार शर्मा ने अपना व्याख्यान दिया । पीसीआईएमएवंएच निदेशक डॉ रमन मोहन सिंह ने स्वागत भाषण में बताया कि पीसीआईएमएवंएच द्वारा अपने भेषजसंहितीय मोनोग्राफों को हिंदी में भी प्रकाशित किया जाएगा ताकि भेषजसंहिताओं तक आसानी से पहुँच हो तथा एएसयूएवंएच हितधारकों में हिंदी भाषा का संवर्धन किया जा सके।

संस्थान के मानकों को हिंदी में करेंगे प्रकाशित : डॉ. रमन

माई सिटी रिपोर्टर

गाजियाबाद। भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथिक भेषज संहिता आयोग (पीसीआईएएच) ने अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

संस्थान के सभागार में आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. रमन मोहन सिंह ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि हम बदलेंगे तो युग बदलेगा, इसी सोच के साथ हमें ज्यादा से ज्यादा हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। इसलिए हमने संस्थान के मानकों को हिंदी में प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। अब से संस्थान के मानक हिंदी में भी प्रकाशित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग की अपेक्षा है कि कार्यक्रम के माध्यम से संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियमों और नियमों की जानकारी दी जाये। कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य हिंदी के प्रति अधिकारियों और कर्मचारियों की झिझक को दूर करना है। मुख्य अतिथि केंद्रीय विद्यालय के हिंदी

राजभाषा के क्रियान्वयन विषय पर कार्यशाला के आयोजन में शामिल बुद्धिजीवी। संवाद

के अध्यापक उमेश कुमार शर्मा ने कहा कि हिंदी को सिर्फ राजभाषा के रूप में ही नही बल्कि भारत की आत्मा के रूप में देखना चाहिए। इस मौके पर डॉ. रविंद्र सिंह, डॉ. जय प्रकाश, पूर्व निदेशक डॉ. राजीव कुमार शर्मा, डॉ. डीआर लोहार ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यशाला का संचालन डॉ. अनुपम मौर्य ने किया और संयोजक दिव्य सौरभ कुशवाहा रहे।

‘हिंदी भाषा नहीं, भारत की आत्मा है’

गाजियाबाद। भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग संस्थान में हिंदी कार्यशाला हुई। मुख्य अतिथि केंद्रीय विद्यालय के हिंदी के अध्यापक उमेश कुमार शर्मा ने कहा कि हिंदी को राजभाषा के रूप में ही नहीं बल्कि भारत की आत्मा के रूप में देखना चाहिए।

उन्होंने हिंदी के प्रयोग के प्रावधानों के साथ राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नीति और राजभाषा नियम 1976 के बारे में विस्तार से बताया। संस्थान के निदेशक डॉ. रमन मोहन सिंह ने कहा कि कार्यशाला का उद्देश्य हिंदी के प्रति अधिकरियों-कर्मचारियों की झिझक को दूर करना रहा।

कार्यक्रम की समाचार-पत्र कवरेज

आयुर्वेदिक भेषजसंहिता का इतिहास

1946 के प्रथम स्वास्थ्य मंत्री सम्मेलन के परिणामस्वरूप, लेफ्टिनेंट कर्नल आर.एन. चोपड़ा को भारत सरकार द्वारा नियुक्त किया गया था और उनकी अध्यक्षता में समिति का गठन 1946 में किया गया । यह चोपड़ा समिति थी जिसने सबसे पहले आयुर्वेदिक औषधीय पौधों की उचित पहचान की आवश्यकता, कच्चे दवा के संग्रह और वितरण पर नियंत्रण और आयुर्वेदिक भेषज संहिता संकलन के लिए सकारात्मक सिफारिश की थी ।

तत्पश्चात, दवे समिति (1955) ने आयुर्वेदिक भेषज संहिता संकलन के लिए सिफारिशों को दोहराया। बॉम्बे सरकार, विशेष रूप से आयुर्वेदिक दवाओं के संसाधनों, उनके संग्रह, खेती, संवर्धन, वितरण और मानकीकरण के सर्वेक्षण में रुचि रखती थी। इसलिए, उन्होंने 1955 में मानक और वास्तविक आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों एवं औषधियों के लिए एक समिति नियुक्त की थी और तत्पश्चात् संदर्भ के संबंध किए गए उल्लेख की नई रिपोर्ट प्राप्त करने के बाद, वैद्य बापालाल शाह की अध्यक्षता में 1957 में मानक आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी एवं औषधि समिति नामक एक दूसरी समिति नियुक्त की, जिसमें से प्रोफेसर ए.एन. नामजोशी सदस्य सचिव थे। गुणवत्ता आश्वासन सुनिश्चित करने के लिए आयुर्वेदिक औषधि के प्रभावी नियंत्रण के लिए बापालाल समिति ने बहुत विस्तृत रूप से भेषज संहिता के संकलन की तत्काल आवश्यकता के रूप में सिफारिश की है। अंततः, भारत सरकार ने डॉ. के.एन. उडुपा (1958) की अध्यक्षता में "आयुर्वेदिक अनुसंधान मूल्यांकन समिति" नियुक्त की, जिसके आयुर्वेदिक भेषज संहिता संकलन की तात्कालिकता पर जोर दिया था।

बॉम्बे राज्य सरकार ने 1951 में आयुर्वेद बॉम्बे अनुसंधान बोर्ड की स्थापना की, जिसे बाद में 1955 और 1958 में पुनर्गठित किया गया। भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी में औषधि मानकीकरण सहित सभी पहलुओं में अनुसंधान के लिए भारत सरकार ने 1969 में सीसीआरआईएमएच में स्थापना की। इस परिषद् को 1978 में 4 शोध परिषद् में विभाजित किया गया था तथा आयुर्वेद और सिद्ध में इन शोध कार्यों को केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद् को सौंपा गया । कर्नल सर राम नाथ चोपड़ा की अध्यक्षता में 1962 में पहली आयुर्वेदिक भेषज संहिता परिषद् का गठन किया गया। 1972 में प्रोफेसर ए.एन. नामजोशी की अध्यक्षता में समिति का पुनर्गठन किया गया जिसने भारतीय आयुर्वेदिक सूत्र संहिता के संकलन का काम संभाला । अब तक, भारतीय आयुर्वेदिक भेषज संहिता के 10 खंड, भाग- । (एकल औषधि) में 665 मोनोग्राफ तथा 4 खंड और 01 भारतीय आयुर्वेदिक भेषज संहिता का एकल मोनोग्राफ, भाग- ॥ (योग संग्रह) में 203 मोनोग्राफ प्रकाशित किए गए हैं।.

छात्रों का भ्रमण दौरा

पीसीआईएमएवंएच भारत के होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेजों के स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों / फैकल्टी हेतु उनके पाठ्यक्रम के अनुसार एक दिवसीय प्रयोगशाला दौरे का संचालन करता है। एएसयूएवंएच औषधियों के मानकीकरण और परीक्षण में इस्तेमाल की जाने वाली तकनीकों को समझने के लिए 4 होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेजों के छात्रों ने जनवरी माह में पीसीआईएमएवंएच का दौरा किया।

1. सयाली चैरिटेबल ट्रस्ट कॉलेज ऑफ होम्योपैथी, मिम्मिता, औरंगाबाद
2. डी.एन. डीई होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
3. बंगाल होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, पश्चिम बर्धमान, पश्चिम बंगाल
.4. बीजू पटनायक होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, ब्रह्मपुर, गंजम, ओडिशा

औषधीय पौधों का बीज बैंक

पीसीआईएमएवंएच आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथिक औषधियों की प्रणाली में उपयोग किए जाने वाले औषधीय पौधों के एक विशाल जर्म प्लाज़्म बैंक का रखरखाव कर रहा है। पीसीआईएमएवंएच के बीज बैंक में औषधीय पौधों की लगभग 100 स्थानिक और विदेशी प्रजातियों के बीजों का रखरखाव किया जा रहा है।

समाचार पत्र में पीसीआईएमएवंएच

गाजियाबाद LIVE — अपना शहर

हवा को साफ कर बीमारियों को दूर भगाएंगे औषधीय पौधे

प्रदीप वर्मा

गाजियाबाद। आयुष मंत्रालय के अंतर्गत आने वाली चिकित्सा पद्धतियों के लिए गाइडलाइन तैयार करने वाली संस्था भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी रिसर्च संहिता आयोग (पीसीआईएमएच) परिसर में 200 प्रजातियों के पौधे लगाएगा। 10 एकड़ में औषधीय वन क्षेत्र तैयार होने से वातावरण में शुद्धता आएगी। वहीं, शोध के लिए भी जड़ी-बूटी मिल सकेगी। भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद और योग का लोहा भारत ही नहीं पूरे विश्व में माना जा रहा है। इसी वजह से आयुष मंत्रालय के अंतर्गत आने वाली चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद, सिद्धा, यूनानी, होम्योपैथी और योग के प्रचार प्रसार को लेकर केंद्र सरकार बेहद कवायद कर रही है। आयोग का मुख्यालय कमला नेहरू नगर में बना हुआ है। जहां आयोग की प्रयोगशालाओं के अलावा वैज्ञानिकों के कार्यालय, निदेशक ऑफिस एवं एक बड़ा परिसर है। निदेशक डॉक्टर रमन मनमोहन सिंह के निर्देश पर खाली पड़े परिसरों में औषधीय वन क्षेत्र विकसित किया जा रहा है। आयुर्वेद, सिद्धा, यूनानी और होम्योपैथी की पद्धति आयुर्वेद की तरह ही हैं इसलिए करीब 1500 प्रजातियों में से 200 प्रजातियों के पौधे परिसर में लगाने की तैयारी शुरू हो गई है।

10 एकड़ में विकसित करेगा पीसीआईएमएच औषधीय वन क्षेत्र

जड़ी-बूटियों के पौधे तैयार होंगे

अनंतमूल, अपराजिता, अरंडी, अशोक, कंटकारी, कनेर, कमल, करीपत्ता, करौंदा, गुग्गुल, गुड़हल, चित्रक, जई, जामुन, जैट्रोफा, ढाक, धतूरा, निर्गुंडी, नींबू घास, पत्ता अजवाइन, पलाश, पाथरचट्टा, परिजात, पीपली, पीपल, पुदीना, पुनर्नवा, बाकूची, बड़ी इलायची, बेल, बेलिस, ब्रह्मी, भुई आंवला, मंडूकपर्णी, मकोय, रीठा, लाजवंती, सतावर, सदाबहार, सहिजन, सेना पत्ता, सेमल, हिरनखुरी।

होम्योपैथी दवा के लिए लगेंगे यह पौधे

केमोमिला, कैलेंडुला, कॉफी, गीदड़ तंबाकू, टाइलोफोरा, रस ग्लाबरा, रस टॉक्स, रुटा ग्रेविलोंस, संबुकस, सिनेरेरिया

जानें, किस बीमारी में कौन सा पौधा काम आएगा

पौधा	बीमारी	गिलोय	खांसी
अडूसा	खांसी	गुडमार	मधुमेह
अकरकरा	दांत की बीमारी	घृतकुमारी	त्वचा संबंधी रोग
अमलतास	पेट की बीमारी	तुलसी	सर्दी जुकाम
अर्जुन	हृदय रोग	नीम	त्वचा संबंधी रोग
अश्वगंधा	बलवर्धक	पीला बांसा	खांसी
आंवला	विटामिन सी	बहेड़ा	पेट संबंधी विकार
कपूर तुलसी	सर्दी जुकाम	मुलेठी	खांसी
काल मेघ	बुखार	सर्पगंधा	हाइपरटेशन
काला बासा	खांसी	स्टेविया	मधुमेह
किवांच	बलवर्धक	हरड़	पेट संबंधी रोग

"प्रयोगशालाओं में उपयोग के लिए 200 से ज्यादा प्रजातियों के पौधे लगाए जा रहे हैं। ताकि रिसर्च में इनका उपयोग हो सके। औषधीय वन क्षेत्र विकसित होने से वातावरण में तो शुद्धता आएगी और रिसर्च कार्य में प्रयोग होने वाली जड़ी-बूटी के लिए का इंतजार नहीं करना होगा।

– डॉ. रमन मोहन सिंह, अध्यक्ष, पीसीआईएमएच

16-01-2023

गणतन्त्र दिवस का आयोजन

पीसीआईएमएवंएच द्वारा 26 जनवरी 2023 को गणतंत्र दिवस मनाया गया। पीसीआईएमएवंएच के सभी स्टाफ सदस्यों के लिए विभिन्न सांस्कृतिक एवं खेल गतिविधियों का आयोजन कर ध्वजारोहण समारोह के साथ समापन किया गया ।

लाल किले के प्रांगण में 26 से 31 जनवरी, 2023 तक "भारत पर्व"

भारत पर्व के अवसर पर 26 से 31 जनवरी, 2023 तक लाल किले प्रांगण, नई दिल्ली में पीसीआईएमएवंएच द्वारा एएसयूएवंएच औषधियों के गुणवत्ता नियंत्रण और मानकीकरण से संबंधित गतिविधियों को प्रदर्शित करने के लिए स्टाल लगाया गया ।

फार्मास्युटिकल विज्ञान का वैश्विक सम्मेलन

पीसीआईएमएवंएच के निदेशक डॉ. रमन मोहन सिंह आमंत्रित अतिथि के रूप में ए आर ऑडिटोरियम, अहमदाबाद मैनेजमेंट एसोसिएशन (एएमए), अहमदाबाद में फार्मास्युटिकल विज्ञान पर वैश्विक सम्मेलन में शामिल हुए। निदेशक, पीसीआईएमएवंएच ने 5 जनवरी 2023 को वैज्ञानिक सत्र में "देश में गुणवत्तापूर्ण पारंपरिक औषधियों को बनाए रखने के लिए भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषज संहिता आयोग (पीसीआईएमएवंएच) की भूमिका" पर एक व्याख्यान भी दिया। पीसीआईएमएवंएच निदेशक ने डॉ. एच. जी. कोशिया, आयुक्त, खाद्य एवं औषधि नियंत्रण प्रशासन (एफडीसीए), गुजरात सरकार के साथ वार्ता की और एएसयूएवंएच दवाओं के गुणवत्ता नियंत्रण से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई

13वां आईएएसटीएएम व्याख्यान एवं पुरस्कार समारोह-2023 तथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

डीपीएसआरयू, नई दिल्ली में 21 जनवरी से 22 जनवरी, 2023 तक 13वें आईएएसटीएएम व्याख्यान एवं पुरस्कार समारोह-2023 तथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पीसीआईएमएवंएच के अधिकारियों के साथ निदेशक, पीसीआईएमएवंएच निदेशक ने भाग लिया। निदेशक ने एएसयूएवंएच औषधियों की गतिविधियों और गुणवत्ता नियंत्रण पर व्याख्यान भी दिया।

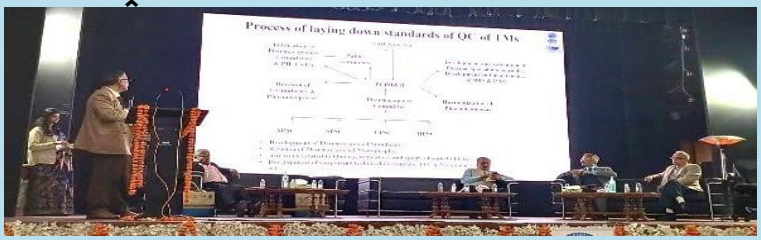

अंतर्राष्ट्रीय आयुष शिखर सम्मेलन-2023

पीसीआईएमएवंएच ने कन्याकुमारी में आयोजित 27 से 29 जनवरी 2023 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय आयुष शिखर सम्मेलन-2023 में भाग लिया। डॉ. ए जयंती, पीएसओ (भेषज अभिज्ञान) ने एएसयूएवंएच औषधियों की गुणवत्ता नियंत्रण बनाए रखने में पीसीआईएमएवंएच की भूमिका पर व्याख्यान दिया।

For any Information / Suggestion/ Queries, please contact

Director

Pharmacopoeia Commission for Indian Medicine & Homoeopathy

(Central Drug Laboratory for Indian Medicine & Homoeopathy)

Kamla Nehru Nagar, Ghaziabad

Phone no: (0120) 2787014; Email: dir.pcimh-ayush@gov.in

https://twitter.com/pcim_h & https://www.facebook.com/pcim.h.7/